विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रचलित इंटर्नशिप कार्यक्रम का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक आत्मीयता, समावेशीय अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल पर प्रभाव का अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा की पी.एच.डी.(शिक्षा शास्त्र) उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबंध की

रुपरेखा

2018

निर्देशक | **शोधार्थी**

प्रो0 पी.एस.त्यागी | सुमित उपाध्याय

विभागाध्यक्ष | **संकाय प्रमुख**

फाउन्डेशन ऑफ एजूकेशन | **शिक्षा संकाय**

शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग,आगरा

1.0 प्रस्तावना

व्यावसायिक कुशलता के लिए सैद्धांतिक ज्ञान के साथ –साथ व्यावहारिक ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है। सैद्धांतिक ज्ञान व्यक्ति में वैचारिक दृष्टिकोण विकसित करता है, वहीं व्यावहारिक ज्ञान उसे अनुभव प्रदान करता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होता है। व्यावसायिक कुशलता के लिए आवश्यक है, कि व्यक्ति में उस चयनित व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो जिसे उत्पन्न करने के लिए व्यक्ति को व्यावसायिक–व्यावहारिक ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है। व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति और व्यावहारिक ज्ञान के लिए कई प्रकार के कार्यक्रम चलाए जाते हैं उनमें से महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, इंटर्नशिप। इंटर्नशिप कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थी चयनित व्यवसाय से जुडे हुऐ हर पहलू से परिचित होता है, तथा विभिन्न शैक्षिक व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन सीखता है। इंटर्नशिप कार्यक्रम विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों जैसे– चिकित्सा क्षेत्र, अभियांत्रिकी क्षेत्र, कृषि क्षेत्र इत्यादि में पहले से ही संचालित हो रहे हैं। शिक्षक शिक्षा में भी इंटर्नशिप को अनिवार्य कर दिया गया है जिससे शिक्षक शिक्षार्थियों मे शिक्षा–व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया जा सके।

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के स्व–अधिगम व स्वतंत्र चिंतन की क्षमता का विकास करने के लिए यशपाल समिति (1992), ने शिक्षा की बदलती जरूरतों के अनुसार शिक्षक–प्रशिक्षण–कार्यक्रम को प्रासंगिक एवं व्यावहारिक बनाने पर मुख्य जोर दिया। समस्त शिक्षण व्यवस्था की प्रगति छात्राध्यापकों की प्रशिक्षण गुणवत्ता पर निर्भर करती है। कक्ष–शिक्षण कृत्य, अध्यापक व विद्यार्थियों के मध्य परस्पर होने वाली सम्प्रेषणात्मक अंतःक्रिया का प्रतिफल है। भावी अध्यापकों की शिक्षण–सक्षमता के उन्नयन के लिए उनको अवलोकन आधारित अध्ययन के प्रत्येक घटक के प्रति जागरूक करना है, क्योंकि विद्यालयी गतिविधियों का संचालन, उनमें मौजूद शिक्षकों की शिक्षण–सक्षमता पर निर्भर है, उनके कक्षागत् व्यवहार का अनुकरण विद्यार्थियों की निष्पत्तियों के रूप में झलकता है। इस प्रकार गाँधीजी की बुनियादी तालीम की संकल्पना के क्रियान्वयन से देश के नवयुवक शिक्षा के साथ–साथ हाथों में कार्य दक्षता एवं मनोवृत्ति में रचनात्मकता लिए होगें। वे आत्मनिर्भर, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा आत्मसम्मान के साथ राष्ट्रीय विकास में योगदान दे पाएगें।

शिक्षक प्रशिक्षण की दयनीय एवं दुर्बल स्थिति से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परिचित है। जिसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित जस्टिस वर्मा अयोग (2012), ने अपनी रिपोर्ट में वैधानिक रूप से प्रमाणित किया कि अध्यापक प्रशिक्षण में ज्ञान के कुछेक अंशों का इस्तेमाल पारस्परिक रूप से किया जाता है। जिसका कक्षागत् व व्यवहारिक परिस्थितियों से भी कोई सम्बंध नहीं हो पाता है। वर्तमान चुनौतीपूर्ण अस्थिरता के दौर में कुछ अध्यापक तल्लीनता एवं शालीनता के साथ अपने उत्तरदायित्वों को लगन व कर्मठता से निर्वहन कर रहे हैं। ऐसे अध्यापक समाज में बच्चों को दिशा देने में अपनी सृजनात्मक मनोवृत्ति के साथ योगदान दे रहे हैं। भावी अध्यापकों के प्रशिक्षण में सुधार कर उसे सुचारू बनाने के लिये एन.सी. एफ.टी.ई. रेगुलेशन (2014) के अलावा आर.टी.ई. एक्ट (2009) में भी शिक्षण–सक्षमता की जरूरतों पर बल दिया गया है। वर्तमान अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के पुर्नगठन से नवीन प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को विद्यालयी अनुभवों के दर्शन तथा बालकों की संवेगात्मक जरूरतों का पाठ्यचर्या के घटकों पर पड़ने वाले प्रभाव को समझते हुए, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की परिस्थितियों का अवलोकन करना है, ताकि वे पाठ–योजना नियोजन, शिक्षण तथा मूल्यांकन कर छात्रों व समुदाय के सदस्यों के बीच सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम हो पाऐं।

इसी क्रम में शिक्षक–प्रशिक्षण–कार्यक्रम (बी0एड0) में भी इंटर्नशिप कार्यक्रम को वर्ष 2014 में एन0 सी0 टी0 ई0 ने अनिवार्य कर दिया है। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर में इंटर्नशिप कार्यक्रम को रखा है इससे पूर्व यह प्रोग्राम टींचिग प्रैक्टिस के रूप में संचालित होता था, जिसमें केवल शिक्षक प्रशिक्षणार्थी कक्षा का संचालन करना सीखता था, अन्य शिक्षण प्रक्रिया वविद्यालयी गतिविधियों को नहीं सीखता था, जबकि इंटर्नशिप कार्यक्रम के द्वारा भावी शिक्षकों को शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं शैक्षिक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए कई प्रकार के घटकों को इस कार्यक्रम में रखा गया है। इंटर्नशिप कार्यक्रमों के विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से प्रशिक्षणार्थी विद्यालयी परिवेश से परिचित होने के साथ–साथ अपने प्रयोगात्मक कार्यों को पूर्ण करते है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में बढ़ोत्तरी भी होती है, साथ ही शिक्षण व्यवसाय के विभिन्न कौशलों का अर्जन करते हैं।

शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम की मान्यता एन0सी0टी0ई0 द्वारा प्रदान की जाती है, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन का कार्य विभिन्न राज्यों में भिन्न–भिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने निम्न विश्वविद्यालयों का चयन किया है।

1. एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय (अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़)
2. एक राज्य विश्वविद्यालय (डॉ० भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा)
3. एक डीम्ड विश्वविद्यालय (दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा)

उपरोकत विश्वविद्यालयों में शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में इंटर्नशिप कार्यक्रम की रूपरेखा एन0सी0एफ0टी0ई0 रेग्यूलेशन (2014) के अनुसार संचालित होती है। सभी विश्वविद्यालयों में इंटर्नशिप कार्यक्रम के घटकों में परस्पर समानता दिखाई देती है, यह समानता शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में समरुपता प्रदर्शित करती है। लेकिन इंटर्नशिप कार्यक्रम के प्रबंधन में पर्याप्त अंतर पाया जाता है। चयनित केन्द्रीय विश्वविद्यालय (अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय) इंटर्नशिप कार्यक्रम को स्वंय के विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त विद्यालयों में संचालित करते है। जबकि चयनित राज्य विश्वविद्यालय (डॉ0 भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय) एवं डीम्ड विश्वविद्यालय (दयालबाग एजूेशनल इंस्टीट्यूट) विभिन्न राज्य एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के मान्यता प्राप्त विद्यालयों में संचालित करते है। इस प्रकार इंटर्नशिप कार्यक्रम के प्रबंधन में पाये जाने वाले अंतर का प्रभाव शिक्षक प्रशिक्षणार्थीयो के अनुभवों में भिन्नता प्रदर्शित कर सकता है। इंटर्नशिप कार्यक्रम के प्रबंधन का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों व्यावसायिक एवं व्यावहारिक कुशलता को प्रदर्शित करता है, जिसका प्रयोग शिक्षक प्रशिक्षणार्थी भविष्य में शैक्षिक व्यवसाय में आने वाली चुनौतियों एवं समस्याओं के निराकरण में करता है एवं स्वयं को एक कुशल शिक्षक के रूप में स्थापित करता है।

इंटर्नशिप कार्यक्रम का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रभाव व्यक्ति के अनुभवों को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने में सहायक है। इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रशिक्षणार्थियों के व्यावसायिक कुशलता के साथ–साथ व्यावहारिक रूप से भी व्यक्ति को भविष्य की व्यावसायिक समस्याओं चुनौतियों के समाधान के लिए भी तैयार करता है।

इंटर्नशिप कार्यक्रम में ग्रहण किए गए अनुभवों के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एक कुशल शिक्षक बनने की ओर आगे बढ़ता है, तथा साथ ही नवीन शैक्षिक कौशलों को ग्रहण करता है जिसका प्रयोग वह आने वाले भविष्य में करता है। इस कार्यक्रम से शिक्षक प्रशिणार्थी अपने अंदर कई प्रकार के परिवर्तन महसूस करता है जैसे सांवेगिक आत्मीयता(Emotional Self-efficacy),समावेशीय अभिवृत्ति (Inclusive attitude) और शिक्षण कौशल (Teaching Skills) जिनके द्वारा उसके व्यवहार का परिमार्जन होता है जो उसे शैक्षिक व्यवसाय में कुशलता प्राप्त होती है जो उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है।

शिक्षक प्रशिक्षाणार्थी के **सांवेगिक आत्मीयता** से तात्पर्य यह है कि जब वह विद्यालय एवं कक्षागत क्रियाकलापों से परिचित होता है तो उसके अंदर उपस्थित, संवेग उसे शैक्षिक व्यवसाय में आगे बढ़ने को प्रेरित करते है तथा नकारात्मक संवेगों को वह परिमार्जित कर उन्हे सकारात्मक बनाने की कोशिश करता है। मैक्ड्यूगल के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में चौदह प्रकार के संवेग पाए जाते है परिस्थिति अनुसार व्यक्ति अपने संवेगों को प्रकट करता है यदि व्यक्ति किसी व्यावसायिक गतिविधि में भाग लेता है तो व्यवहारिक रूप से संवेग उसकी मनोदैहिक प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करने का प्रयास करते है। संवेग व्यक्ति की आत्म प्रभावकारिता या आत्मीयता को भी प्रभावित करते है। प्रायः यह देखा जाता है कि व्यक्ति में तीन प्रकार की आत्मीयता पाई जाती है। Work Self-efficacy, Academic Self-efficacy and Career-Self-efficacy व्यक्ति उपर्युक्त तीनों स्थानों पर सांवेगिक रूप से कार्य करता है और प्रत्येक प्रकार की Self-efficacy को संवेग प्रभावित करने का प्रयास करते है इन्हें सामूहिक रूप से सांवेगिक आत्मीयता कहा जाता है।

इंटर्नशिप कार्यक्रम द्वारा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक आत्मीयता को प्रभावित किया जा सकता है क्योंकि इंटर्नशिप कार्यक्रम में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न परिस्थितियों में रखकर विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप करवाए जाते है, जो उन्हें सांवेगिक रूप से परिपक्व बनाते है।

समावेशी शिक्षा ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें मूल्यों, ज्ञान प्रणालियों और संस्कृतियों में प्रक्रियाओं और संरचनाओं के सभी स्तरों पर समावेशी नीतियों और प्रथाओं के सृजन के माध्यम से बुनियादी मानव और शारीरिक, संवेदनशील, बौद्धिक या स्थितिजन्य हानियों के साथ सभी नागरिक अधिकारों को प्राप्त किया जाता है'।

शिक्षक जब विद्यालय में शिक्षण के लिए जाता है तो कक्षा के उसे विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थी मिलते है इनमें कुछ दिव्यांग, पिछडे, बौद्धिक रूप से पिछडे हो सकते है प्रायः यह देखा जाता है कि शिक्षक कभी—कभी उनके साथ एकसमान व्यवहार नहीं करता है, जिससे उन बच्चों के विकास के समुचित अवसर प्राप्त नहीं होते है। शिक्षक के इस व्यवहार को दूर करने के लिए शिक्षक को पाठ्यक्रम में इस प्रकार के बच्चों से जुड़े पहलुओं का बोध करवाया जाता है, जब वह शिक्षक प्रशिक्षणार्थी विद्यालय में इस प्रकार के बच्चों के सम्पर्क में आते है जो शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षार्थियों को सिखाने के विभिन्न कौशल विकसित होते है। जो उन विशिष्ट बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायता करते है। **समावेशीय अभिवृत्ति** से तात्पर्य है, कि शिक्षण प्रशिणार्थियों में विद्यार्थियों (पिछडे, वंचित या अलाभान्वित, विकलांग) के प्रति सकारात्मक रूख एवं एकात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना जिससे उन्हे भी समाज की मुख्य धारा में जोड़ा जा सके और राष्ट्र उन्नति में भागीदारी के लिए प्रेरित किया जा सके। इंटर्नशिप कार्यक्रम के घटक केस स्टडी, एक्शन रिसर्च एवं निदानात्मक शिक्षण इत्यादि प्रक्रियाओं के द्वारा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में समावेशीय अभिवृत्ति विकसित की जा सकती है।

शिक्षण कुशलता शिक्षक उत्कृष्टता का एक अहम पहलू है। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को अनेक कार्य एक साथ करने पड़ते हैं जैसे पढ़ाना—लिखना, प्रश्न पूछना, स्पष्ट करना, प्रदर्शन करना आदि इसलिये इसे क्रियाओं का संकुल कहा जाता है। अध्यापक का कार्य विद्यार्थी को इन क्रियाओं में संलग्न करना है। यह शिक्षण कौशल काफी तकनीकी युक्त और परिश्रमपूर्ण होते हैं। इन शिक्षण कौशलों की प्रकृति एक जैसी नहीं होती, इनमें निहित शिक्षण व्यवहारों में भी काफी अन्तर पाया जाता है और इसलिए उन सभी का

अभ्यास और उन्हें विकसित करने की प्रक्रिया में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक ही हैं। वास्तव में शिक्षण कौशलों द्वारा शिक्षक के व्यवहार प्रदर्शित होते है। शिक्षक की सभी क्रियाएँ विद्यार्थियों के अधिगम की ओर केन्द्रित रहती हैं। शिक्षक की इन क्रियाओं में कभी व्याख्यान देना, कभी उदाहरण प्रस्तुत करना, कभी विशिष्ट शब्दों की व्याख्या करना तथा कभी कक्षा में कुछ करके दिखाना आदि सम्मिलित होता है। शिक्षण प्रक्रिया में प्रयुक्त होने वाली इस प्रकार की सभी क्रियाएँ ही शिक्षण कौशल कहलाती हैं। शैक्षिक कौशलों से तात्पर्य है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थी उन सभी क्रियाकलापों से अवगत हो जाए जो विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास कर सके और शैक्षिक व्यवसाय में आने वाली चुनौतियों एवं समस्याओं से निपट सके और एक कुशल राष्ट्र निर्माता के तौर पर उसे स्थापित कर सके।

कोठारी आयोग (1964—1966) ने कहा था कि **देश का भविष्य उसकी कक्षाओं में निर्मित हो रहा है।** उपरोक्त कथन को साकार करना हे तो आवश्यक है कि भावी शिक्षक ऐसे हों जो राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें और शैक्षिक व्यवसाय के प्रति रूचिपूर्ण तरीके से कार्य करें विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति लगन उत्पन्न करें और स्वयं में भी समय परिस्थितिनुसार व्यवहार परिमार्जन करे। इंटर्नशिप कार्यक्रम के द्वारा ही व्यक्ति को शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न किया जा सकता है।

1.1.0 समस्या का प्रादुर्भाव

भारत युवाओं का देश है। जिसकी 65% आबादी युवा है, इन युवाओं को देश का मानवीय संसाधन कहा जाता है। यदि इस मानवीय संसाधनों को शिक्षित कर नवीन कौशल विकसित किए जाए तो भारत एक विकासशील देश से विकसित देश हो जाएगा।

राष्ट्रीय विकास के लिए मानवीय संसाधन को उपयोगी बनाने में अध्यापकों की अहम् भूमिका है। कक्षागत् क्रियाकलापों के लिये अध्यापक अनेक शिक्षण—युक्तियों एवं विधियोंका प्रयोग करता है। वर्तमान में गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराने पर अधिक बल दिया जा रहा है, शिक्षण में सृजनात्मक अभिवृत्ति शिक्षार्थियों की रचनात्मकता को पोषित करती है। जिससे शिक्षार्थी उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का समुचित

प्रयोग करके संतोषजनक परिणामों को सुनिश्चित करते हैं। यशपाल समिति (1992), ने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में छात्राध्यापकों के स्वतंत्र चिंतन व स्व–अधिगम क्षमता के विकास पर मुख्य जोर दिया। उत्तम स्तर के शिक्षण–संस्थानों को स्थापित करने में अध्यापकों की शिक्षण–कौशल–सक्षमता एक महत्वपूर्ण कारक है, जिससे आकृष्ट होकर छात्र ऐसे संस्थानों में प्रवेश को प्राथमिकता देते हैं। छात्राध्यापकों की पेशेवर सक्षमता को विकसित करने के लिए शिक्षा में शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.), अध्यापक पात्रता परीक्षा (टी.ई.टी.) एवं दो वर्षीय बी.एड. प्रशिक्षण एवंइंटर्नशिप कार्यक्रम आदि अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता हेतु शिक्षण प्रशिक्षण के पर्याप्त अवसरों को स्थान दिया गया है।

इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान ही शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि,क्या दो वर्ष के पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप कार्यक्रम के द्वारा गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक तैयार होंगे ? सभी विश्वविद्यालयों में इटर्नशिप कार्यक्रम का स्वरूप एवं क्रियान्वयन किस प्रकार का है ? विभिन्न विश्वविद्यालयी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सांवेगिक आत्मीयता, सामावेशीय अभिवृत्तिएवं शिक्षण कुशलता आदि व्यावहारिक पक्षों पर इंटर्नशिप कार्यक्रम का कितना प्रभाव पड़ेगा ? क्या इटर्नशिप कार्यक्रम उपरान्त विभिन्न विश्वविद्यालयी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यावहारिक पक्षों में पर्याप्त अन्तर पाया जायेगा ?उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तरप्राप्ति हेतु शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत समस्या को शोध समस्या के रूप में चयनित किया गया है।

1.2.0 समस्या का औचित्यः

मानवीय संसाधनों को शिक्षित एवं उनका सर्वांगीण विकास विद्यालय में होता है। विद्यालय में प्रायः यह देखा जा रहा है कि शिक्षकों का रवैय्या विद्यालय की कक्षागत क्रियाकलापों में सकारात्मक नहीं है, इस कारण देश के युवा सही प्रकार से शिक्षित नहीं हो पा रहे है एन0 सी0 टी0 ई0 ने इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक तैयार करने हेतु बी0 एड0 पाठ्यक्रम को दो वर्ष का किया एवं टींचिंग प्रैक्टिस के स्थान पर इंटर्नशिप कार्यक्रम विकसित करने हेतु दिशानिर्देश दिए जिससे कि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षक तैयार हो सकें तथा उनमें व्यावहारिक गुण विकसित किए जाए जैसे सांवेगिक आत्मीयता, शैक्षिक

व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, विद्यालय में समावेशीय अभिवृत्ति एवं नवीन शैक्षिक कौशलों का अर्जन आदि।

शोधार्थी ने इंटर्नशिप कार्यक्रम, सांवेगिक आत्मीयता, समावेशीय अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल संबंधित जिन शोधों का अध्ययन किया है उनकी सूची इस प्रकार है–

तालिका संख्या 1.1.0 इंटर्नशिप कार्यक्रम, सांवेगिक आत्मीयता, समावेशीय अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल से संबंधित शोध।

क्र0स0	शोधार्थी	वर्ष	शोध अध्ययन का विषय
1	वार्ड, डब्लू टी0 एण्ड अदर्स	1964	डेवलपिंग द् टीचिंग इंटर्नशिप कॉ–सैप्ट इन ऑरिजन
2	होल्डावे एण्ड अदर्स	1994	द् वेल्यू ऑफ एन इंटर्नशिप प्रोग्राम फार विगनिंग टीचर्स
3	स्मिथ, ई0 एण्ड अदर्स	1998	टूवार्ड रियल टीचिंगः अ टीम इंटर्नशिप प्रपोसल
4	रिचर्डसन एण्ड अदर्स	2006	द् टीचिंग इंटर्नशिप इन अ वैचलर ऑफ एजूकेशन प्रोग्राम
5	कारपैण्ट, एल0, ब्लांश, बी0	2007	टींचिग इंटर्नशिप एण्ड द् लर्निग कम्यूनिटी
6	जे0ए0 जैलीशन	2007	एटीट्यूड टूवार्ड इन्क्लूशन एण्ड स्टूडैण्ट विद् डिसैविलिटी।
7	चोपड़ा आर0	2008	फैक्ट्रस इन्फ्लूएन्शिग एलीमैण्टरी लेवल टीचर एटीट्यूड टूवार्डस, इनक्सूसिव एजूकेशन।
8	शुक्ला एस0	2009	शिक्षण दक्षता, व्यावसायिक प्रतिबद्धता और कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन।
9	खोरा एस0	2009	टीचर प्रोफेशनलिज्मः स्टडी ऑफ टीचर्स एण्ड कलासरूम प्रासेस।
10	क्रीक बी0	2009	द् रोल ऑफ इमोशनल सैल्फ एफीकैशी, इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड इफैक्ट इन वर्क प्लेस सैटीसफैक्शन।
11	एकैटेरिना एम0, मारिया एस0	2010	टीचर्स एटीट्यूड टूवार्डस इनक्लूसिव एजूकेशन।
12	कोशनिक सी0, वैक सी0	2010	द् इंटर्नशिप कौम्पोनेण्टस ऑफ अ टीचर एजूकेशन प्रोग्रामः अपोरचुनेटी फॉर लर्निग।
13	फेरिल, व्यूबुकू	2010	स्टुडेन्ट टीचर परसेप्शन ऑफ टीचर कम्पीटेन्सी एण्ड देयर एट्रीव्यूशन फॉर सक्सेस एण्ड फेलियर इन लर्निंग।

14	रोड्स एण्ड अदर्स	2011	द् टीचर इंन्टर्नशिप एक्पीरियैन्श ऑफ परस्पैक्टिव हाईस्कूल मैथमैटिक्स टीचर्स
15	स्टीफेन्स, जी0 ई0	2011	टीचिंग इंटर्नशिप इन प्रोफेशनल डेवलवमेण्ट इन कैरियर एण्ड टैक्नीकल एजूकेशन
16.	गुप्ता एस.एल., दिगम्बर एण्ड रामचन्द्रन	2011	उच्च शिक्षा के अध्यापकों की भारत में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का प्रभाव का अध्ययन।
17	आस्था, सुशमा शर्मा और स्मृति भार्गव	2011	सेवारत प्राथमिक शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति : कुरूक्षेत्र जिले के सर्वे परिणाम (हरियाणा)।
18	मिर्जा एन0, प्रवीन एम0	2012	इंटर्नशिप प्रोग्राम इन इजूकैशन इफैक्टिवनेश, प्रोब्लम्स एण्ड प्रोसपैक्ट्स।
19	सूद वी0 ,आनन्द ए0	2012	हिमाचल प्रदेश के बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन।
20	शर्मा डी0	2012	प्राथमिक अध्यापकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति।
21	गिल, पैस्टर एण्ड अदर्स	2012	टीचिंग लर्निग एण्ड इनक्लूसीव एजुकैशन द् चैलेन्जिग टीचर, टैनिंग फॉर इन्क्लूशन।
22	पूल एल0डी0, क्वैल्ट्र पी0	2013	इमोशनल सैल्फ एफीकैशी, ग्रेजुएट एम्पलोएबिलिटी एण्ड कैरियर सैटीस्फैक्शन।
23	चैन्नत सी0	2014	इंटर्नशिप इन प्री सर्विस टीचर एजूकेशन प्रोग्रामः ए ग्लोबल परस्पैक्टिव।
24	स्मिथ एम0, होसवनिक के0	2015	एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टूवार्ड द् इन्क्लूशन ऑफ चिल्ड्रन विद् स्पैशल नीड इन प्राइमरी एण्ड सैकेण्ड्री स्कूल।
25	क्वैल्टर पी0, पूल एल0डी0	2015	इमोशनल सैल्फ एफीकैशी स्केल।
26	अरमुम एण्ड चैलेपन के0	2015	सोशल एण्ड इमोशनल सैल्फ एफीकैशी ऑफ एडोलेसैण्ट।
27	चावन आर0, खण्डागले बी0एस0	2017	ए स्टडी ऑफ द् एम0एड0 इंटर्नशिप प्रोग्राम परसीव्ड वाय स्टूडैण्ट टीचर एजूकेशन।
28	अब्देल हादी	2017	इमोशनल सैल्फ एफीकैशी अमंग ए सैम्पल फैकल्टी मैम्बर्स एण्ड इट्स एरिक।

उपर्युक्त शोध अध्ययनों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि गत शोध अध्ययनों में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में इंटर्नशिप सम्बन्धी शोधशिक्षण कौशलों के संदर्भ में तो हुए हैं,लेकिन इंटर्नशिप कार्यक्रम का अध्ययन व्यवहारिक प्रयोग के आधार पर नहीं किया गया है जिससे यह ज्ञात हो सके कि व्यक्ति की सांवेगिक आत्मीयता, समावेशी अभिवृत्ति इस कार्यक्रम से प्रभावित होती है या नहीं।

शोधार्थी ने इस शोध विषय का चुनाव इन व्यावहारिक परिवर्तनों को स्पष्ट करने तथा विभिन्न विश्वविद्यालयी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों पाये जाने वाली इन व्यावहारिक गुणों के अन्तर को स्पष्ट करने के लिए ही इस शोध विषय को चुना है।

1.3 समस्या कथन–

विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रचलित इंटर्नशिप कार्यक्रम का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक आत्मीयता, समावेशीय अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल पर प्रभाव का अध्ययन।

1.4.0 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या–

1.4.1 विश्वविद्यालय–

विश्वविद्यालय स्तर से तात्पर्य उन उच्च शिक्षण संस्थाओं से है जिन्हे केन्द्र एवं राज्य सरकार के विभिन्न अधिनियमों के माध्यम से स्थापित किया गया है जहाँ 10+2 अथवा इंटरमीडिएट के बाद स्नातक एवं स्नाकोत्तर की कक्षाँए संचालित होती है।

कार्यात्मक परिभाषा–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एन0सी0टी0ई0 द्वारा मान्यता प्राप्त विभिन्न प्रकार के विश्वविद्यालयों (केन्द्रीय, राज्य एवं डीम्ड विश्वविद्यालय) का चुनाव किया गया है जिनमें शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यक्रम संचालित होते है।

1.4.2 इंटर्नशिप कार्यक्रम–

Internship programmes in general are supposed to facilitate 'the transition from student status in a profession's pre service education programme to the status of a full- fledged member of the profession' (Ratsoy et al., 1987, p.8).

कार्यात्मक परिभाषा–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इंटर्नशिप से तात्पर्य उन शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण से है, जो सेवा पूर्व शिक्षण व्यवसाय के कौशलों अर्जन, शिक्षक व्यवसाय की चुनौतियों से परिचित होकर शिक्षण व्यवसाय में कुश्लता प्राप्त करने कि दिशा में अग्रसर होते है।

1.4.3 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी–

वह व्यक्ति है जो किसी शिक्षण संस्थान में शिक्षक बनने हेतु आवश्यक डिग्री लेने के लिए नामांकित होता तथा निर्धारित पाठ्यक्रम को निर्धारित समय में पूर्ण कर शिक्षक शिक्षा में डिग्रीप्राप्त करता है।

कार्यात्मक परिभाषा–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से तात्पर्य उन बी0एड0 अभ्यर्थियों से है जो दो वर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश लेते हैं।

1.4.4 सांवेगिक आत्मीयता

सांवेगिक आत्मीयता से तात्पर्य व्यक्ति के उन संवेगों के प्रदर्शन से है जिनके माध्यम से वह प्रतिकूल परिस्थितियों में वह अपने चेहरे एवं मनोदैहिक क्रियाओं के द्वारा अपने आत्मविश्वास को प्रदर्शित करता है।

कार्यात्मक परिभाषा–

सांवेगिक आत्मीयता एक शिक्षक का उस पहलू है जिसके द्वारा वह विभिन्न परिस्थितियों जैसे विद्यालय,कक्षागत क्रिया कलाप,शैक्षिक क्रियाओं और विद्यालयी व्यावसायिक परिस्थितियों में आत्मविश्वास प्रदर्शन से है।

1.4.5 समावेशीय अभिवृत्ति

एक समावेशी शिक्षा प्रणाली में स्कूल विद्यालय के सामान्य विद्यार्थियों के साथ अन्य विद्यार्थियों (दिव्यांग) के समान बनाना जिससे इन्हे अधिक से अधिक समाहित किया जा सके दूसरे शब्दों में सभी बच्चों को उन्ही के समुदाय में नियमित विद्यालयों में शिक्षा प्रदान की जाए **(यूनेस्को सलमांका कान्फ्रेंस 1994)**

कार्यात्मक परिभाषा–

समावेशीय अभिवृत्ति से तात्पर्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थी के उस व्यवहार से जिसके द्वारा वह विशिष्ट बालकों को सामान्य बालकों की भाँति शिक्षित करे तथा उन्हे भी विकास के समुचित अवसर प्रदान करें जिससे वह राष्ट्र निर्माण में भागीदार बने।

1.4.6 शिक्षण कौशल

शिक्षण कौशल उन परस्पर सम्बन्धित शिक्षण–क्रियाओं या व्यवहारों का समूह हैं जो विद्यार्थी के अधिगम में सहायता देते हैं।बी0 के0 पासी

कार्यात्मक परिभाषा–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षण कौशलों से तात्पर्य है शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से ग्रहण किये गये विभिन्न कौशलों जैसे कक्षागत क्रियाकलाप कक्षागत अन्तःक्रिया तथा शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति से है जो उसे शिक्षण व्यवसाय में कुशलता प्राप्त करने में सहायक होते है।

1.5.0अध्ययन के उदद्श्यः

1. विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रचलित इंटर्नशिप कार्यक्रम का अध्ययन करना।
2. विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक आत्मीयता का अध्ययन करना।
3. इंटर्नशिप कार्यक्रम का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक आत्मीयता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

4. विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समावेशीय अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. इंटर्नशिप कार्यक्रम का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समावेशीय अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशलों का अध्ययन करना।
7. इंटर्नशिप कार्यक्रम का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशलों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
8. विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक आत्मीयता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समावेशीय अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
10. विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.6.0 अध्ययन की परिकल्पनाः

1. इंटर्नशिप कार्यक्रम का सांवेगिक आत्मीयता पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
2. इंटर्नशिप कार्यक्रम का समावेशीय अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
3. इंटर्नशिप कार्यक्रम का शिक्षण कौशलों पर सार्थक प्रभाव पड़ेगा।
4. इंटर्नशिप कार्यक्रम उपरांत विभिन्न विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की सांवेगिक आत्मीयता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
5. इंटर्नशिप कार्यक्रम उपरांत विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की समावेशीय अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
6. इंटर्नशिप कार्यक्रम उपरांत विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण कौशलों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

1.7.0 अध्ययन विधिः

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति के आधार पर **कार्योत्तर/घटनोत्तरविधि** (ex-post facto research)का प्रयोग किया गया है।

1.8.0 अध्ययन में प्रयुक्त चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्न चरों का समावेश किया है।

स्वतंत्र चर– इंटर्नशिप कार्यक्रम।

आश्रित चर– सांवेगिक आत्मीयता, समावेशीय अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल।

नियंत्रित चर– विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी।

1.9.0 अध्ययन की परिसीमाएँ–

1. प्रस्तुत अध्ययन पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आगरा मण्डल एवं अलीगढ़ मण्डल तक सीमित रहेगा।
2. प्रस्तुत अध्ययन एन0सी0टी0ई0 द्वारा मान्यता प्राप्त एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, एक राज्य विश्वविद्यालय एवं एक डीम्ड विश्वविद्यालय तक सीमित रहेगा।
3. प्रस्तुत अध्ययन 500 शिक्षक प्रशिक्षार्थियों तक सीमित रहेगा।
4. प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष में संचालित इटर्नशिप कार्यक्रम का अध्ययन किया जायेगा।

1.10.0 न्यादर्श का चयन

चित्र संख्या 1.10.0

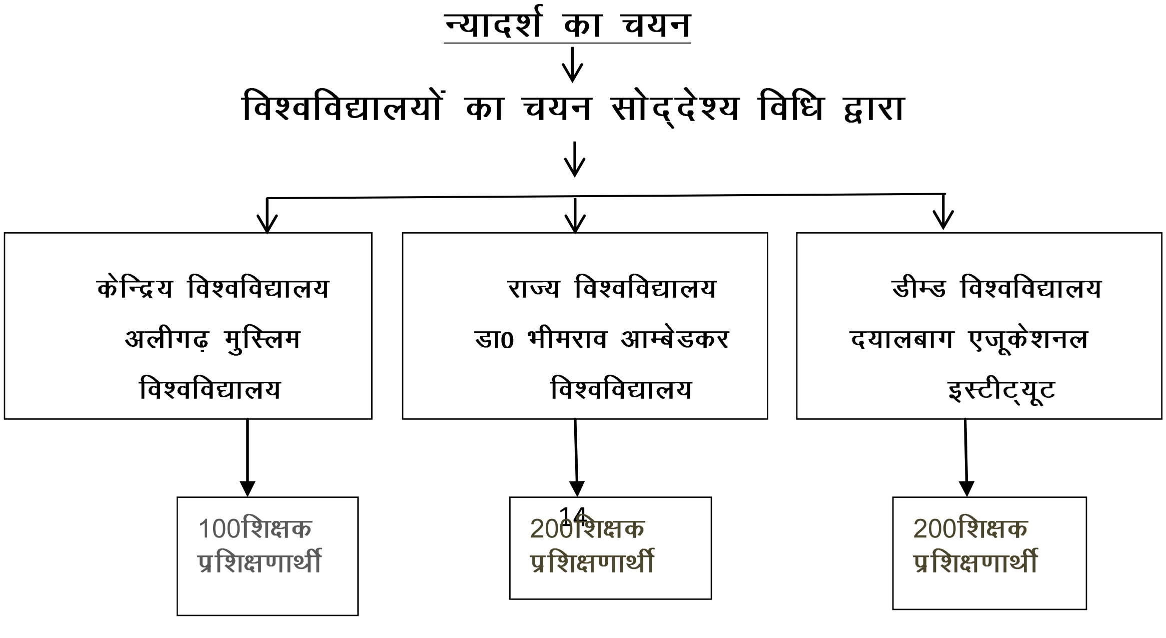

1.11.0 सांख्यिकी प्रविधियाँ–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रदत्तों प्रकृति को देखते हुए वर्णनात्मक एवं निष्कर्षनात्मक दोनो ही प्रकार की सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा, जो निम्नवत् है।

चित्र संख्या 1.11.0

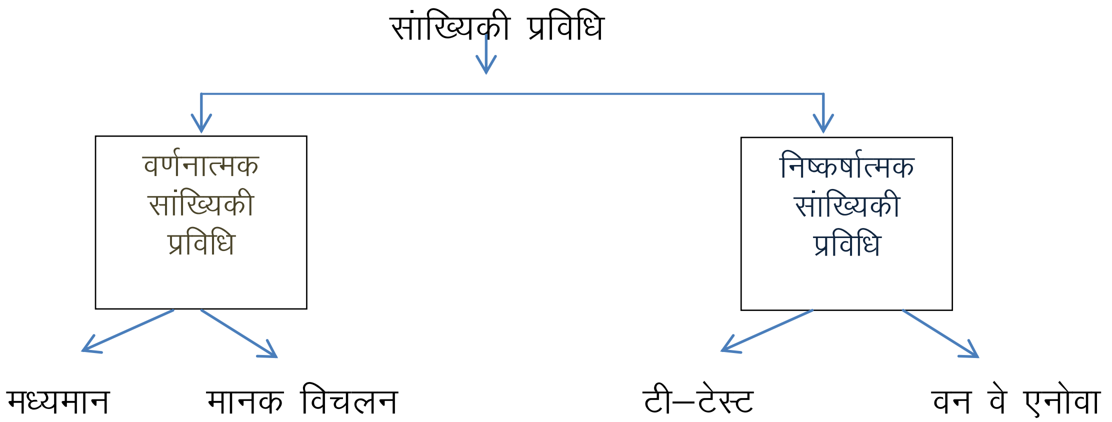

1.12.0 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरों के मापन के लिए निम्नवत् उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

1. सांवेगिक आत्मीयता–लॉरियन ड्रेकेपूल, पामेला क्वेल्टर (द इमोशनल स्ट्रस्चर ऑफ द् इमोशनल सैल्फ एफीकेशी स्केल 2012)
2. समावेशीय अभिवृत्ति– स्वनिर्मित उपकरण।
3. शिक्षण कौशल– स्वनिर्मित उपकरण।

1.13.0 अध्ययन की सार्थकता–

शिक्षक को ही शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति एवं शैक्षिक संस्थानों की आधारशिला माना गया है। यद्यपि यह बात सत्य भी है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्यसहगामी क्रियाएें, सहायक शिक्षण सामग्री, आदि सभी वस्तुऐं व क्रियाकलापों का भी शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान होता है, परन्तु शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सबसे अधिक प्रभावित करता है।इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक उपरोक्त सभी शैक्षिक घटकों के विषय में जानकारी प्राप्त

करता है साथ ही उनके प्रभावी क्रियान्वयन के वास्तविक रूप से परिचित होता है। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के शिक्षक प्रशिक्षणार्थी विभिन्न व्यवहारिक परिवर्तनों को भी महसूस करता है, जैसे–सावेंगगिक आत्मीयता, समावेशीय अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षकों को बाल–मनोविज्ञान के साथ–साथ सांवेगिक रूप से परिपक्व होने की आवश्यकता है उपरोक्त शोध अध्ययन द्वारा विभिन्न विश्वविद्यालयी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में विकसित सांवेगिक आत्मीयता के स्तर का ज्ञान हो सकेगा तथा इंटर्नशिप कार्यक्रम में सांवेगिक आत्मीयता के स्तर की बढ़ाने हेतु विशिष्ट कार्यक्रम विकसित करने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। जिससे शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षार्थियों एवं कार्यस्थल संबंधी समस्याओं का निराकरण संभव हो सकेगा।

इंटर्नशिप कार्यक्रम के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षणार्थी विद्यालयी परिवेश में शिक्षण कार्य को सीखते है, वह विद्यालयी परिवेश में सामान्य एवं विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बालकों के संम्पर्क में आते है, प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षणार्थी का अभिवृति उन विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों के प्रति भिन्न–भिन्न हो सकती है, उपरोक्त शोध अध्ययन के निष्कर्षो के माध्यम से इंटर्नशिप कार्यक्रम में इस समस्याओं के निराकरण हेतु प्रभावी कार्यक्रम जैसे केस–स्टडी, क्रियात्मक अनुसंधान आदि के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकेगा।जिससे सामान्य एवं विशिष्ट बालको के प्रति सहयोग व सहकारपूर्ण व्यवहार तथा समान संसाधनों का वितरण हो सकेगा। इंटर्नशिप कार्यक्रम का उदेद्श्य शिक्षक, प्रशिक्षणार्थी को पूर्ण रूप से शैक्षिक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करना है। जिसमें शिक्षक प्रशिक्षणार्थी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों में संलग्न रहता है उन विभिन्न गतिविधियों में शिक्षण अधिगम कौशलों का अर्जन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में संचालित इंटर्नशिप कार्यक्रमों के समान उदेद्श्य होते हैं, जो शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को शैक्षिक व्यवसाय के प्रति व्यावहारिक रूप से तैयार करते हैं। उपरोक्त शोध अध्ययन से स्पष्ट हो सकेगा कि क्या विभिन्न विश्वविद्यालयों में संचालित इंटर्नशिप कार्यक्रम के प्रबंधन का प्रभाव शिक्षक परीक्षाणर्थियों के शिक्षण कौशलों पर भिन्न–भिन्न होता है अथवा समान ?

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा भावी अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता एवं सृजनात्मक अभिवृत्ति के अनुक्षेत्रों के बोध से उनमें निर्दिष्ट चरों के प्रति रचनात्मक व आत्मविश्लेषी अभिवृत्ति का अनुप्रयोग हो सकेगा, जिसका अप्रत्याशित लाभ शिक्षाविदों, प्रशिक्षकों, अधिगमकर्ताओं की शैक्षिक उपलब्धियों के उन्नयन में भी सहायक होगा, साथ ही शिक्षा व प्रशिक्षण की गुणवत्ता सुधार को भी सम्भव कर सकेगा। शिक्षण के प्रति सांवेगिक आत्मीयता पाठ्यवस्तु के संप्रत्यय को सिद्धांत की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक बनाती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा ऐसी बनायी जाए, जिससे शिक्षण कौशलों के सकारात्मक बोध द्वारा उचित पैडागॉजिकल संबंध को सुनिश्चित किया जा सकेगा। शिक्षण के प्रति सृजनात्मक अभिवृत्ति, सांवेगिक आत्मीयता,समावेशीय अभिवृत्ति एवं शिक्षण कौशल केमाध्यम से अध्यापक प्रशिक्षण में चयनित छात्राध्यापकों की पेशेवर प्रत्याशा व पैडगॉजिकल बोधगम्यता विकसित हो सकेगी।

प्रस्तुत अध्ययन भावी अध्यापकों की रचनात्मक अभिवृत्ति को उनके विषय ज्ञान की विचारशीलता, तार्किक चिन्तन द्वारा प्रशिक्षण के विभिन्न घटकों जैसे सूक्ष्म शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण, पाठ नियोजन तथा कक्ष–प्रबन्ध आदि अवसरों के व्यवहारिक अनुभव प्रदान करेगा। प्रशिक्षकों एवं नीति निर्माताओं द्वारा शिक्षण कौशल विकास के विभिन्न मॉडयूलों की भूमिका से प्रशिक्षण के विभिन्न स्तरों पर अभिविन्यास कार्यक्रम को सुस्पष्ट ढंग से लागू किया जा सकेगा। सेवापूर्व प्रशिक्षण में प्रशिक्षुता (इंटर्नशिप) के अंतर्गत समुचित आंकलन व फीडबैक प्रदान कर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण योग्यताओं, दक्षताओं तथा कौशलों में सुधार किया जा सकेगा। बेहतर शिक्षण की आवश्यकताओं तथा व्यावसायिक वृद्धि के लिए उच्च प्रशिक्षण विधियों जैसे कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, समसमायिक संवाद तथा पाठ्य सहगामी गतिविधियों/क्रियाकलापों सशक्त फॉलोअप किया जा सकेगा। प्रशिक्षण में उक्त अध्ययन आवश्यकता को आधार बनाने पर छात्राध्यापक कक्ष–शिक्षण की वास्तविक समस्याओं का सामना कर उचित समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकेंगे। भावी अध्यापक सांवेगिक आत्मीयतासमावेशीय अभिवृत्तिशिक्षण कौशलके गुणों एवं क्षमताओं की पहचान करके अपनी स्व धारण को परिमाजित करगें। प्रशिक्षण में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को उचित दिशा देकर यथोचित शिक्षण–सक्षमता को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अरमूम पी0, चैलेपन के0 (2015): सोशल एण्ड इमोशनल सैल्फ एफीकेशी ऑफ एडोलेसेण्ट ; शोध पत्र इंटरनेशनल जनरल ऑफ एडोलेसैण्ट एण्ड यूथ वोल्यूम–21, (2016) इश्यू 3 ।

आस्था एस0, शर्मा एस0, भार्गव एस0(2011) सेवारत प्राथमिक शिक्षकों की समावेशित शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति : कुरूक्षेत्र जिले के सर्वे परिणाम (हरियाणा)। टीचर एजूकेशल शोध पत्रः यू0जी0सी0 कॉन्फैस 2011 ।

एन0सी0एफ0टी0ई0 रेग्यूलेशन (2009)http://www.mhrd.gov.in/ncfteregulation2009

एन0सी0एफ0टी0ई0 रेग्यूलेशन (2014): http://www.mhrd.gov.in/ncfte2014-draft report.

कारपैण्ट, एल0, ब्लांश, बी0 (2007), टींचिग इंटर्नशिप एण्ड द् लर्निग कम्यूनिटी, रिचर्स गेट पब्लिकेशन।

क्रीक0बी0(2009): द् रोल ऑफ इमोशनल सैल्फ इफीकैशी, इमोशनल इन्टैलीजेन्स एण्ड इफैक्ट इन वर्क प्लेस सैटीशफैक्शन ; एमरैल्ड इनसाइट जनरल चैप्टर (9)ISSN 978–188485।

क्वैल्टर पी0, पूल एल0डी0 (2015): द् इमोशनल सैल्फ एफीकैशी स्कैल; यूक्लेन यूनीवर्सिटी ऑफ सैण्ट्रल लैकेन्शायर ISSN 0737–2839।

कोशनिक सी0, वैक0सी0(2010):द् इंटर्नशिप कम्पोनैण्ट्स ऑफ ए टीचर एजूकेशन प्रोग्रामःअपोश्चुनेटी फॉर लर्निगः आर्टिकल इन जनरल टीचर एजूकेटर वोल्यूम 39,2013।

खोरा एस0,(2009): टीचर प्रोफेशनज्मिः स्टेडी ऑफ टीचर्स एण्ड कलासरूम प्रासेस'' पीएच.डी. शोध कार्य डिपार्टमेन्ट ऑफ एजुकेशन टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशियल साइन्स, मुम्बई।

गिल एफ0जी, पैसटर एस0,(2012): टीचिंग लर्निंग एण्ड इन्क्सूसिव एजूकेशनः द् चैलेन्जिस ऑफ टीचर ट्रेनिंग फॉर इनक्सूशन शोध पत्रः प्रोसिडियाः सोशल एण्ड विहेवियर साइन्स (36)।

गुप्ता एस0एल0,प्रसादडी0 (2011)ः उच्च शिक्षा के अध्यापकों की भारत में शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का प्रभाव का अध्ययनशोधपत्र नेशनल एजूकेशल स्टडीजप्रोग्राम इन देहली, वोल्यूम 10।

चावनआर0,खण्डागले वी0एस0, (2017)ः अ स्टडी ऑफ द् एम0एड0 इंटर्नशिप प्रोग्राम परसीव्ड वाय स्टूडैण्ट टीचर एजूकेशल शोध पत्रः यू0जी0सी0 द्वारा संचालित कॉन्फैस 2017।

चोपड़ा आर0,(2008)फैक्ट्रस इन्फलूएन्शिग इलीमैण्ट्री स्कूल टीचर्स एटीट्यूट टूवार्ड इनक्सूसिव एजूकेशन शोध पत्रः विट्रिश एजूकेशनल रिसर्च एशोशिएसन एनूअल कॉन्फ्रेंस।

चैन्नत0सी0(2014)ः इटनैशिप इन प्री सर्विस टीचर एजूकेशल प्रोग्रामः अ ग्लोबल परस्पैक्टिव; शोध पत्र इम्पैक्ट जनरल वोल्यूम–2, इश्यू'11 (79–94)।

जनसंख्या आकंड़े (2011)ः http://www.drishtiias.com/hindi/.../India-is-the-world-s-youngest-country.

जैलीशन ए0(2007)एटीट्यूड टूवार्ड इन्क्लूशन एण्ड स्टूडैण्ट डीसैबिलिटी ; शोध पत्र जेस्टोर जनरल (स्प्रिंग,2007) पी0पी0 9–23।

पूल एल0डी0, क्वैल्टरपी0(2013)ः इमोशनल सैल्फ एफीकैशी, ग्रेजुएट एम्प्लोएबिलिटी एण्ड कैरियर सैटीशफैक्शन ; शोध पत्र, यूक्लेन यूनीवर्सिटी ऑफ सैण्ट्रल लैकेन्शयर।

प्रवीन, एस0, मिर्जा एन0 (2012)ः इंन्टर्नशिप प्रोग्राम इन इजूकैशनः इफैक्टीवनेश, प्रोब्ल्म्स एण्ड प्रोम्पैक्ट्स : रिसर्च पैपर इंटरनैशनल जनरल ऑफ लर्निंग एण्ड डैवलपमैण्ट वो02 न01।

यशपाल समिति (1992)ः शिक्षा की बदलती जरूरतों के अनुसार शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम http://www.mhrd.gov.in// reportverma.js1992

रिचर्डसन एण्ड अदर्स (2006),द् टीचिंग इंटर्नशिप इन अ वैचलर ऑफ एजूकेशन प्रोग्राम साउथ पैसिफिक जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन, वोल्यूम 23

वार्ड, डब्लू टी0 एण्ड अदर्स (1964) डेवलपिंग द् टीचिंग इंटर्नशिप कॉन्सैप्ट इन ऑरिजन जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन, 15 252–261

शर्मा डी0 (2012): प्राथमिक अध्यापकों की समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति0,पीएच.डी. शोधकार्य बी0एच0यू0।

सरिता डी0 (2009): क्वालिटी रिव्यूलेशन एण्ड एफिशियन्सी ऑफ टीचर एजुकेशन प्रोग्राम इन देहली पी0एच0डी0 शोधकार्य दिल्ली वि" वविद्यालय।

स्मिथ0एम0, होसविनक के0 (2015):एटीट्यूड ऑफ टीचर्स टूवार्डस द् इनक्लूसन ऑफ चिल्ड्रन विद् स्पैशल नीड इन प्राइमरी एण्ड सैकैण्ड्री स्कूलः ऑरिजनल साइन्टिफिक पेपर यू0डी0के0 ।

स्मिथ, ई0 एण्ड अदर्स (1998),टूवार्ड रियल टीचिंगः अ टीम इंटर्नशिप प्रपोसल जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन, वोल्यूम 19

स्टीफेन्स, जी0 ई0 (2011), टीचिंग इंटर्नशिप इन प्रोफेशनल डेवलवमेण्ट इन कैरियर एण्ड टैक्नीकल एजूकेशन, जे0सी0 टी0ई0 वोल्यूम 26

सूद वी0 ,आनन्द ए0 (2012):हिमाचल प्रदेश के बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षकों में व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययनपीएच. डी. शोधकार्यहिमाचल वि" वविद्यालय।

हादी ए0(2017): इमोशनल सैल्फ एफीकैशी अमंग ए सैम्पल फैक्ल्टी मैम्बर्स एण्ड इड्स एरिक ;शोधपत्र इंटरनेशनल एजूकेशल स्टडीज, वोल्यूम 10 ISSN 1913–9020।

होल्डावे एण्ड अदर्स (1994),द् वेल्यू ऑफ एन इंटर्नशिप प्रोग्राम फार विगनिंग टीचर्स एजूकेशनल इवैल्यूएशन एण्ड पोलिसी एनालाइसिस 16(2): 205–221

Ratsoy, E., Friesen, D., Holdaway, E. et al. (1987). Evaluation of the initiation to teaching project, final report. Edmonton: University of Alberta.